P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-3* ISSUE-9*(Part-2) December- 2018
E: ISSN NO.: 2455-0817 *Remarking An Analisation*

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में मध्यप्रदेश की विशेष रूप से कमजोर जनजातीय समूहों का तुलनात्मक अध्ययन

हरेन्द्र प्रताप सिंह चौहान
शोद्यार्थी,
स्कूल ऑफ सोशल साइंस एण्ड मैनेजमेंट स्टडीज,
डॉ.बी.आर.अम्बेडकर सामाजिक विज्ञान विश्वविद्यालय, (महूँ)
इंदौर, म.प्र., भारत

सारांश

भारत एक जनजातीय देश है और मध्यप्रदेश में जनजातियों की सर्वाधिक जनसंख्या निवास करती है। विशेष रूप से मध्य प्रदेश में तीन अति पिछड़े जनजातिय समूह पाये जाते है जो कि अपने आप में अनोखे है, उनकी अपनी खासियते, कमियाँ, कमजोरियाँ एवं दिक्कते है। फिर भी उनमें कई तरह की समानताएँ मौजूद है जैसे कि गरीबी, पिछड़ापन, अशिक्षा, स्वास्थ्य, कुपोषण, साहूकारिता, मजदूरी, सामाजिक बहिष्कार और आर्थिक समस्याएँ। आजादी के पहले व आजादी के बाद भारत में सरकारों ने कई योजनाए बनाई, आयोग बनाए परंतु जमीनी स्तर पर उचित क्रियान्वयन नहीं हो सका। ये जनजातियाँ देश के भविष्य निर्माण में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। भारत सरकार ने 550 समुदायों को जनजाति समुदाय के रूप में चिन्हित किया है तथा 75 समुदायों को विशेष रूप से कमजोर जनजाति वर्ग के रूप में घोषित किया गया है जो भारत के 15 राज्यों तथा केन्द्र शासित प्रदेशों में फैली हुई आदिम जनजातियां है।

मुख्य शब्द : पीवीटीजी (विशेष रूप से कमजोर जनजातीय समूह), तुलनात्मक अध्ययन, बैगा, भारिया एवं सहरिया की वर्तमान स्थिति।

प्रस्तावना

इस अध्याय में बैगा, भारिया व सहरिया से जुड़े महत्वपूर्ण बिन्दुओं पर बात की गई है। इन जनजातियों के बारे में परिचय, समुदाय, भाषा, स्वास्थ्य, बिमारियॉ, जड़ी–बूटियॉ, टीकाकरण, मलेरिया, दवाईया, शौचालय, शिक्षा, मजदूरी, वनोपज का संग्रहण तथा बाजार में वनोपज बेचना, जंगल, खेती, फसलें, पशुपालन, पलायन, धर्म, गौत्र, घरों की बनावट, टैटू, रेडियो, वन्या रेडियो, फिल्म, टेलीवीजन, खेल, मनोरंजन, नृत्य, मोबाईल नेटवर्क, मृत्यु, शादी, बुरी आदते, शराब, तंबाकु, सिगरेट, राजनीति, त्यौहार, रीति–रिवाज, बी.पी.एल. कार्ड, वोट, इंदिरा आवास, प्रधानमंत्री आवास के घर, आवागमन के साधन, व्यवसाय, एडवेंचर कैंप, मंदिर, प्रगति जल संसाधन, गांव, बिजली, जीवन–यापन के तरीके, आंगनवाड़ियां, महिलाओ की स्थिति, मासिक धर्म, एनजीओ, आदि बिन्दु जनजातियों की स्थिति को बताते है।

जनजातियाँ जो एक विशेष क्षेत्र में रहती है, एक जैसी भाषा बोलती है जिनकी संस्कृति समान है, जो कि मातृसत्तात्मक एवं पितृसत्तात्मक, दोनो के गुण लिए होती है। वे लोग जो जंगलो के रक्षक है, जो खेती करते है, जानवर पालते है, सुंदर हस्तशिल्पी है, जो अपनी जमीन व पहचान के लिए संघर्ष कर रहे है। जिसे समाज ने पिछड़ा समझा है, जिसे गरीबी का प्रतीक मान लिया गया है जिसकी छवी में महापुरूषों का अभाव है। जो साहूकारों से पीड़ित है, जिनके नाम पर कई प्रोपागेंडा चलाए जाते हैं, जिनमें महिलाओं को पुरूषों के बराबर दर्जा है, जिन्होने बेटियों को कभी नहीं मारा, जो जड़ी बूटियों के ज्ञान को जानते है, वे जो सर्वाधिक पिछड़े हुए है आदि।

साहित्यावलोकन

बैगा, भारिया और सहरिया जनजातियाँ सरल स्वभाव की होती है। इनकी अर्थव्यवस्था जंगलों एवं मजदूरी पर आश्रित है। लकड़ी काटना, जड़ी बुटियॉ, तेन्दुपत्ता, शहद, महुआ, लाख, गोंद, चीड़, चिरोंजी आदि जंगली उत्पादों को एकत्रित करना, मछली पकड़ना, पशु पालन, मुर्गी पालन इनके प्रमुख उद्यम है।

म.प्र. के उत्तरी भाग में स्थित श्योपुर जिला, 5 तहसीलों यथा श्योपुर, बड़ौदा, विजयपुर, वीरपुर तथा करहाल से मिलकर बना है, जिसका क्षेत्रफल कुल 6606 वर्ग किलो मीटर है। आयाताकार ये जिला चंबल नदी के समीप है। 2011 की जनगणना के अनुसार यहॉ की कुल जनसंख्या 6,87,952 और 104 व्यक्ति

प्रति वर्ग कि.मी. का जनसंख्या घनत्व है। यहाँ राजस्व ग्रामों की कुल संख्या 607 है। जिले की कुल जनसंख्या में 23.5 प्रतिशत जनसंख्या सहरिया जनजाति की है जो कि 345 ग्रामों में मौजूद है। ऐसा माना जाता है कि जंगल के निवासी होने तथा जंगल के राजा शेर की समीपता के कारण इन्हे सहरिया कहा जाता है । विद्वानों के अनुसार सहरिया शब्द, 'सेहर' शब्द से मिलकर बना है जिसका अर्थ जंगल है। बैगा जनजाति मंडला, डिण्डोरी, शहडोल, अनुपपूर, उमरिया, राजनांदगांव, बिलासपुर, कवर्धा, सिवनी, छिंदवाड़ा एवं बालाघाट में निवास करती हैं। डिण्डोरी एवं बिलासपुर के बीच के भाग को बैगाचक कहते है। इन्हें आदिम जनजाति भूईयाँ की शाखा माना जाता है। बैगा जनजाति के लोग सदियों से वैद्य का कार्य करते आ रहे है। बैगा जनजाति में किसी की मृत्यु हो जाने पर जलाने और दफनाने दोनों की प्रथा अपनाई जाती है। बैगा समाज में धर्म के प्रति कोई स्पष्ट धारणा नहीं है। नागा उनका आदिम पुरूष है। वे स्वर्ग, नर्क और पुर्नजन्म को मानते है इसलिए 1931 की जनगणना में बैगाओं को एनिमिस्ट लिखा गया था और 1941 की जनगणना में बैगाओं ने अपने आप को हिन्दु घोषित किया। बैगाओं में कई लोक विश्वास है और आदिमपन ही उनका धर्म है। भारिया समाज के व्यक्ति जन्म, विवाह व मृत्यु संस्कारों का आयोजन करते है। इन संस्कारों के पीछे भारिया जनजाति अपने सामूहिक प्रक्रियाओं, अनुष्ठानों, रीति–रिवाजों व मान्यताओं को जीवित रखना चाहती है। भारिया समाज में सभी आयु वर्ग के मृतक संस्कार सामान्य रूप से किए जाते है। यहॉ सभी आयु वर्ग को जलाने का रिवाज है। आदिवासी शब्द दो शब्दों आदि और वासी से मिलकर बना है जिसका अर्थ है मूल निवासी। भारत की जनसंख्या का 8.6 प्रतिशत (लगभग 10 करोड़) हिस्सा आदिवासियों का है। भारत के संविधान में इन्हें 5वीं अनुसूची में अनुसूचित जनजातियों के रूप में मान्यता दी गई है। भारत सरकार द्वारा 75 जनजातीय समूहों को विशेष रूप से कमजोर जनजातीय समूह (पीवीटीजी) के रूप में वर्गीकृत किया गया है। भारत में अनुसूचित जनजाति की जनसंख्या – 2011 की जनसंख्या के अनुसार – 10,42,81,034 कुल, (ग्रामीण – 9,38,19,162, शहरी – 1,04,61,872) दशकीय जनसंख्या वृद्धि कुल – 23.7 प्रतिशत (दशकीय जनसंख्या वृद्धि ग्रामीण – 21.3 प्रतिशत तथा शहरी – 49.7 प्रतिशत), भारत की कुल जनसंख्या का 8.6 प्रतिशत अनुसूचित जनजाति है। भारत की कुल अनुसूचित जनजाति का 14. 7 प्रतिशत हिस्सा मध्यप्रदेश में है। निम्न सूचकांको के आधार पर भारत के 75 आदिवासी समूहों को विशेष पिछड़ी हुई जनजाती की श्रेणी में रखा गया। इस श्रेणी का निर्धारण निम्न मापदंडो के आधार पर किया गया है ।

1. कृषि में पूर्व प्रोद्योगिकी स्तर,
2. साक्षरता का न्यूनतम स्तर
3. अत्यधिक पिछड़े एवं दूरदराज के क्षेत्रों में निवास करना,
4. स्थिर या घटती हुई जनसंख्या

पिछले दो दशकों में मध्यप्रदेश में मौजूद विशेष रूप से पिछड़ी जनजातियों (बैगा, भारिया, सहरिया) की संख्या में वृद्धि हुई है। वर्ष 2001 में सहरिया समुदाय की जनसंख्या 4.502 लाख थी जो वर्ष 2011 में बढकर 6.149 लाख हो गई। इसी तरह बैगा समूह की जनसंख्या 3.329 लाख थी जो 2011 में बढकर 4.145 लाख हो गई। वहीं भारिया की जनसंख्या 1.524 लाख से बढकर 1.932 लाख हो गई। मध्यप्रदेश में आदिवासी समूह की कुल जनसंख्या 1.2233 करोड़ से बढ़कर 1.5316 करोड़ हो गई यानि की लगभग 25 प्रतिशत की वृद्धि हुई। आदिवासी समूहों में लिंगानुपात वर्ष 2001 में 947 था जो 10 वर्षो में बढकर 984 हो गया। वर्तमान समय में बैगा, भारिया और सहरिया के धरातलीय विन्यास में परिवर्तन हो रहा है। जिसकी वजह है जंगलों का खत्म होना तथा मजदूरी के लिए इनका अपने मूल क्षेत्रों से दूर होना। इनकी आर्थिक एवं स्वाभाविक स्थिति में परिवर्तन लाता है। इन जंगलो का आधिपत्य शासन के पास आ जाने से कहीं ना कहीं इनके मूल उद्यम से हटके इन्हें जीवन निर्वाह सीखना पड़ रहा है। जिससे इनके मूल स्वभाव व जीवन में परिवर्तन हुआ है।

अध्ययन का उद्देश्य

1. बैगा, भारिया एवं सहरिया जनजाति का तुलनात्मक अध्ययन
2. बैगा, भारिया एवं सहरिया जनजाति की वर्तमान स्थिति का अध्ययन

शोध प्रविधि

उपर्युक्त शोध गुणात्मक एवं विवरणात्मक शोध हैं, जिसकी प्रविधि के अन्तर्गत अध्ययन का समग्र में मध्यप्रदेश में विशेष रूप से पिछड़ी जनजातियों को लिया गया है। अध्ययन की इकाई में बैगा, भारिया एवं सहरिया जनजाति को लिया गया है। निदर्शन के अन्तर्गत बैगा, भारिया एवं सहरिया जनजाति के गांवो का चयन परपसिव सेंपलिंग के आधार पर किया गया।

आंकड़ो का संकलन

आंकड़ो का संकलन प्राथमिक स्रोतों के द्वारा किया गया जिसमें समूह चर्चा एवं अवलोकन एवं द्वितीयक स्रोतों में केन्द्र सरकार, राज्य सरकार के वार्षिक प्रतिवेदन, शोध–पत्रिकाऐं आदि शामिल है।

बैगा, भारिया एवं सहरिया की वर्तमान स्थिति एवं तुलनात्मक अध्ययन

धार्मिक दृष्टिकोण

तीनो जनजातियाँ हिन्दू धर्म के प्रभाव में है, सहरिया व भारिया तो पूर्ण रूप से हिन्दू परंपराओ को अपना चुके है। जिसमें सहरिया अपने रीति रिवाजो को लगभग भुल चुके है। वहीं भारिया अभी हिन्दू परंपराओ और जनजातिय परंपराओं के मेल को अपना रहे है लेकिन बैगाओं में जनजातीय परंपराओं का असर सबसे ज्यादा है। जो बैगा शहरो के आस पास रहते है वहाँ भी हिन्दू धर्म का फैलाव ज्यादा हुआ है। ऐसी ही स्थिति सहरिया की भी है, जो शहर के पास रहते है वहाँ ज्यादा हिन्दूवादी असर मौजूद है। तीनो में बैगा ही ईसाई धर्मांतरण के प्रभाव में आ रहे है। बैगा में चाणा एवं आस–पास के गांव में कई परिवार अब ईसाई परंपरा को अपना रहे है। शोध के दौरान धर्मांतरित हुए लोग पाए गए और गांव वालो ने उनके बारे में जिक्र भी किया। ऐसा

नहीं है कि यह असर केवल बैगाओ पर है, धौबा व गोंड पर भी इस प्रभाव को देखा जा सकता है। चूंकि बैगा ही सर्वाधिक जनजातीय संस्कृति को जानता है, वह भी खत्म हो जाएगा, जरूरत है की सरकार जनजातिय संस्कृति को संजोए। ये अपने देवी देवताओं को पूजते है हिन्दु धर्म के अलावा ठाकुर देव व अन्य देवता जो सिर्फ उनके कुटुंब या परिवार के हो पर जैसे वक्त गुजर रहा है उन पर अन्य धर्मो के देवताओं का भी असर हो रहा है।

सामाजिक दृष्टिकोण

गौत्र

बैगा, भारिया, सहरिया में गौत्र महत्वपूर्ण है, वे इसे पवित्र संकेत मानते है, यह पुजारी बनने से लेकर विशिष्ट ओहदो तक को परिभाषित करता है। यह परिवार की अनुवांशिक स्थिति को बेहतर रखने का एक वैज्ञानिक तरीका है जो शादी के समय सब से ज्यादा महत्वपूर्ण हो जाता है।

शादी

तीनों जनजातियों में अपने–अपने रीति रिवाजों के अनुसार शादी होती है। जिनमें हिन्दु धर्म का प्रभाव साफ तौर पर देखा जा सकता है, शराब एक अनिवार्य परंपरा है। सहरिया जनजाति विवाह के समय आधुनिकता आ गई है कि लड़के वाले बारात में डीजे लेकर जरूर आते है, ये लड़की वालो के लिए स्टेटस सिंबल है कि लड़का डीजे लेकर आया। शोध अध्ययन के दौरान पाया कि डीजे ना लेकर आने पर कुछ घरों से तो बारात वापस कर दी गई थी। सहरिया शादियों के सीजन में डीजे न मिलने पर दूर से डीजे बुलवाते है और अधिक खर्च करते है। तीनों ही जनजातियाँ शादी के लिए कर्ज लेती है और चुकाती रहती है।

त्यौहार

बैगा, भारिया व सहरिया जिस भी धर्म से प्रभावित है उन्ही के त्यौहार मनाते है जैसे दिवाली, होली, रक्षाबंधन लेकिन इनके अलावा वो कुछ जनजातिय त्यौहार भी मनाते है जैसे बच्चा पैदा होने पर एवं फसल बोने के समय, सामूहिक भोज आदि।

घरों की बनावट

बैगा और भारिया के घरों में कई मायनों में समानताए मौजूद है, वह साधारणतः भारत के घरो का प्रतिनिधित्व करते है लेकिन सहरिया के घर बहुत छोटे व घास–फूस से बने होते है, इनके दरवाजे बहुत छोटे होते है, साधारणतः घर में एक कमरा होता है। जबकि बैगा व भारिया के घर कवेल व लकड़ी के आधार से बने होते है और मजबूत भी होते है इनमें कमरों की संख्या एक से ज्यादा होती है। दोनों के घरों में पशुओं के पालने का स्थान भी होता है वही बैगा व भारिया के पास अनाज सुरक्षित रखने के लिए विशेष बर्तन एवं कोठी होती है। इंदिरा आवास योजना या प्रधानमंत्री आवास योजना के अंतर्गत सभी को घर नहीं मिले है। ये योजना उन अच्छी योजनाओं में से गिनी जा सकती है जो जनजातियों के लिए उपयोगी साबित हुई है परंतु इसकी धीमी रफ्तार व घरों की बनावट कई लोगो को पसंद नहीं आ रही है, उन के अनुसार यह बहुत बंद–बंद है।

भाषा

सहरिया अपनी भाषा खो चुका है, वहीं भारिया की मूल भाषा में अब कुछ ही शब्द बचे है, जो कि वक्त के साथ धीरे धीरे खत्म हो रहे हैं। बैगा की भाषा बैगन, आज भी मौजूद है जो एक पीढी से दूसरी पीढी को सौंपी जा रही है। बैगन भाषा के बचने के पीछे वन्या रेडियो का बड़ा हाथ है क्योंकि वह इसी भाषा में प्रसारित होता है। ये तीनो ही जनजातियाँ हिन्दी भी जानती है।

मनोरंजन

बैगा, भारिया व सहरिया तीनो की शादी वयस्क होने की उम्र के शुरूआती दौर में ही हो जाती है। जिसके परिणाम स्वरूप उनके पास वयस्कों के खेल मौजूद नहीं है, क्योंकि वे शादी के पहले ही आर्थिक जिम्मेदारी उठा लेते है और कभी–कभी बच्चो के साथ क्रिकेट, कबड्डी, खो–खो जैसे खेल खेलते है। महिलाएँ घर में काम करती है और बातें करना उनके मनोरंजन का सर्वाधिक बड़ा हिस्सा है। तीनो ही जनजातियाँ पुरूष प्रधान है जिसके फलस्वरूप तीनो में ही महिलाओं के पास मनोरंजन के ज्यादा साधन नहीं है। वह घर में बच्चो का ख्याल व घर संबंधी काम करती रहती है कुछ बच्चियॉ स्कूल जाने को भी नयापन का माहौल मानती है।

शिक्षा

दूरस्थ स्थानों पर निवास करने की वजह से जनजातीय क्षेत्र में बने विद्यालय में शिक्षक नहीं पहुँच पाते थे, और ना ही वे जाना चाहते थे। परंतु सरकार की सख्ती व स्थानीय लोगो को अवसर मिलने से इस स्थिति में सुधार आया। जब उसी गाँव या क्षेत्र के युवा शिक्षित हुए तब सुधार और बेहतर तरीके से हुआ। शिक्षा एक विशाल परिवर्तन साबित हुई है। जितना कि सामाजिक व आर्थिक उन्नति के सब कार्यक्रम तरक्की नहीं करा सके वो शिक्षा के कार्यक्रम करवा पाए है, शिक्षा ने बैगा, भारिया, सहरिया के युवाओं में उम्मीदें भरी है, वे भारत की तरक्की में कंधे से कंधा मिलाकर चलने के लिए तैयार हो रहे है। इसमें विशेष रूप से स्कूली शिक्षा सफल रही है। जिन स्कूलों में हॉस्टल सुविधा थी उन्होने और भी अधिक तरक्की की है। परंतु उच्च शिक्षा में तीनो ही वर्ग अभी बहुत पिछड़े हुए है। वजह है उन महाविद्यालयों व युनिवर्सिटियों का जनजातीय क्षेत्रों से दूर होना। उन स्थानों पर जहाँ महाविद्यालय मौजूद भी है वहाँ के विषय जनजातीय रूचि को प्रेरित नहीं करते। आज आवश्यकता है कि भारत में जनजातीय महाविद्यालय खोले जाए तथा उनकी पहचान जनजातीय महानायको के रूप में हो और जनजाती प्रोत्साहन करने वाली योजनाओं के नाम भी उनके महापुरूषों पर हो जिससे वो अपना जुड़ाव महसूस कर सके।

स्वास्थ्य

बैगा, भारिया व सहरिया के क्षेत्र में प्राथमिक स्वास्थ्य, चिंता का विषय है। वहाँ डॉक्टरों की उपलब्धता में कमी, दवाओं की कमी, सुविधाओं की कमी की वजह से वे झाड़फूक व अंधविश्वास में यकीन करनते है। वे अपनी देसी जड़ी बूटियों पर स्वास्थ्य के लिए निर्भर है। जनजातीय क्षेत्रो में बहुत अधिक संख्या में मच्छरो का पाया जाना आम बात है यह उनकी मृत्यु के कारणों में से एक है। भारिया क्षेत्र में तो एक खतरनाक जानलेवा मच्छर

फाल्सीफेरम पाया जाता है, हालाकि भारिया लोगों पर उसका असर कम होता है परंतु बाहरी लोगों पर इसका असर बहुत अधिक है। वहीं बैगा व सहरिया मलेरिया नामक रोग से अत्यधिक पीडित रहते है। इन क्षेत्रो में 108 की योजना को अत्यधिक सराहा जा रहा है जब भी इन तीनों जनजातियों में किसी भी महिला की डिलेवरी होने वाली हो तो वे लोग 108 को कॉल कर लेते है। और 108 को संचालित करने वाले संगठन के तुरंत प्रतिक्रिया की वजह से इन तीनो जनजातियों के लोग डिलेवरी अस्पतालों मे कराने लगे है। इसके पीछे सरकार की अन्य स्वास्थ्य से जुड़ी योजनाओं का भी योगदान है। जैसे अस्पताल में डिलेवरी कराने पर धन की प्राप्ति होती है, नवजात शिशु से जुडा मार्गदर्शन भी प्राप्त होता है यह भी कारण है कि शिशु मृत्यु दर में कमी आई है। चूंकि धनराशि की प्राप्ति की वजह से जनजातियों का सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्रों में आना जाना बढ़ा है जिससे उनमें स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता आई है। उदाहरण स्वरूप टीके लगवाने वालो का प्रतिशत अत्यधिक बढ़ा है व जनजातियाँ इनको लगवाने का महत्व भी जानती है। भारत अंतराष्ट्रीय स्तर पर लगातार अस्पतालो की जागरूकता, कुपोषण का कम होना, सफाई का बढना, बच्चो की मृत्युदर में कमी आना, टीकाकरण आदि कारणों की वजह से सराहना पड़ रहा है। लेकिन अब भी प्राथमिक केन्द्रो को बढाने की आवश्यकता है और बैगा, भारिया, सहरिया क्षेत्रों में विशेष सुविधा देने की भी आवश्यकता है जो वहाँ मौजूद स्वास्थ्य केन्द्रो को बेहतर बना सके।

कुपोषण

साधारणतः भारत में मौजूद अधिकतर जनजातियों में कुपोषण की समस्या पायी गई है। भारिया व बैगा तथा सहरिया में भी कुपोषण बहुत अधिक मात्रा में है। सहरिया का नाम सर्वाधिक कुपोषित जनजातियों में शामिल है। भारत में कुपोषण एक बिमारी की तरह फैला हुआ है। जिस पर लगातार काम किया जा रहा है।

पानी

जनजातीय क्षेत्रो में अक्सर पानी की कमी पाई जाती है, उनके पीने के पानी की गुणवत्ता पर हमेशा सवालिया निशान उठाए जा सकते है। वहीं पशुओं के लिए पीने के पर्याप्त पानी पर ही सवालिया निशान है। उन के पीने के पानी की गुणवत्ता पर तो कोई विचार भी नहीं करता जो जनजातिय क्षेत्र में पानी के प्राकृतिक स्रोत है पर उनका उपयोग इस तरह से किया जाता है कि वह दूषित हो जाता है। समस्या साधारणतः गर्मी के दिनों में आती है ऐसा समय हो जाता है कि जनजातीय महिलाओं को पीने के पानी के लिए दूर दूर तक जाना पड़ता है। इस पानी लाने की वजह से महिलाएँ अपने दिन का महत्वपूर्ण हिस्सा इसी में खो देती है। जनजातीय क्षेत्रो में साधारणतः' महिलाएँ ही पानी लाती है। इस अध्ययन के दौरान ये देखा गया कि भारिया की तुलना में सहरिया व बैगा के पास अधिक मात्रा में पानी उपलब्ध है। इसकी खास वजहो में से एक है भारिया की भौगोलिक स्थिति। गर्मी के दिनों में भारिया क्षेत्र पानी की भीषण दिक्कत से गुजरते हैं और अत्यधिक दूषित पानी पीने को राजी हो जाते है। भारिया क्षेत्र झरनों के पानी पर निर्भर हो जाता है। यह प्राकृतिक रूप से उपलब्ध झरनो पर निर्भर करते है। लेकिन ऐसा नहीं है कि बैगा व सहरिया के पास पूर्ण रूप से पानी है वहाँ आज भी पीने के पानी के लिए जद्दोजहद मौजूद है। आप ने अक्सर सुना होगा कि एम. पी. की विशेष रूप से कमजोर जनजाति ज्यादा नहाना पसंद नहीं करती है उसकी वजह यह है कि जहाँ पीने के पानी की समस्या है वहाँ नहाने के पानी होने की कल्पना असंभव है।

शौचालय

भारत सरकार द्वारा तीनो जनजातीय क्षेत्रो में प्रत्येक घर में शौचालय का निर्माण कराया जा चुका है लेकित पानी की कमी की वजह से उन का उपयोग नहीं हो पा रहा है। भारत में खुले में शौच की समस्या बहुत विषाल है। जनजातीय क्षेत्रो में अभी भी यही चलन है।

सामाजिक कुरितियॉ

बाल विवाह

आज भी सुदूर क्षेत्रों में बाल अवस्था में ही बच्चों की शादी हो जाती हैं पर धीरे–धीरे जागरूकता आ रही है, शादी की उम्र लगातार बढ़ती जा रही है। जो गांव, शहरो के निकट है उनमें ऐसा न के बराबर हो रहा है। जो पढ़ लिख गए है वो भी बाल विवाह का विरोध कर रहे है, गांवों में भी पुलिस का डर है और उन्हें पता है कि ये गलत है।

शराब

तीनो ही जनजातियाँ शराब पीना पसंद करती है। खासकर पुरूष शराब पीने की वजह से अधिक पिछड़े हुए है।

गुटखा

तीनों जनजातियाँ गुटखा खाना पसंद करती है लेकिन सहरिया सर्वाधिक गुटखा खाते है। इसमें भी महिलाओं की भागीदारी पुरूषों के बराबर है वहीं भारिया व बैगा महिलाएँ गुटखा खाने से परहेज करती है।

मृत्युभोज

जनजातियो में भी मृत्यु–भोज का चलन है और कुछ जनजातियां शरीर को दफनाती है या गाड़ते है छोटे बच्चों को अक्सर गाढ़ दिया जाता है। जनजाती में जलाने का प्रचलन भी हिन्दु धर्म से प्रभाव के बाद आया है।

माहवारी

जिस भी जनजातिय समूह पर हिन्दु धर्म का प्रभाव है उसमें महिलाओं की माहवारी के दौरान हाथ न लगाना, दूर रहना, दूर बैठना, रसोई में कार्य न करना प्रचलित है। जब उनसे अध्ययन के दौरान जानने की कोशिश की तो उनके जवाब सीमित थे जैसे की बाकी महिलाएँ इसे मानती है तो हम भी मानते है, हमारे उपर बुरी छाया रहती है, जबकि वास्तविकता में किसी को भी नहीं मालूम था कि क्यों रखते है?, इस बारे में बात करते वक्त महिलाएँ शर्म एवं झिझक महसूस कर रही थी, महिलाओं को लगता है कि ये बात करने का विषय हीं नहीं है।

आर्थिक दृष्टिकोण

भारिया आर्थिक रूप से मजबूत स्थिति में मौजूद है। तीनो विशेष रूप से कमजोर जनजातिय समूहों में बैगा

व सहरिया की आर्थिक स्थिति में ज्यादा अंतर मौजूद नहीं है परंतु भारिया इनमें बेहतरी पर मौजूद है। तीनो ही जनजातियाँ मेहनती है पर भारिया इनमें सर्वाधिक मेहनती है तथा सहारिया सबसे कम। सहरिया अपनी आदतों की वजह से ज्यादा बदनाम है जैसे कि पैसे आने पर सहरिया काम करना बंद कर देते हैं जबकि भारिया व बैगा मजदूरी निरंतर जारी रखते है भारिया पैसो के ज्यादा अच्छे सेवर है।

कर्ज

तीनों जनजातियों में कर्ज या तो समुदाय के अन्य लोगो से लिया जाता है या साहुकारो से लिया जाता है। इन्हे कर्ज का ब्याज चुकाना पड़ता है और कर्ज के ब्याज की वजह से यह हमेशा साहूकारों की रहमों पर ही जिंदा रहते है।

मजदूरी

बैगा भारिया सहरिया तीनो ही मजदूरी करते हैं। महिला व पुरूष दोनो मजदूरी करना पसंद करते है, सहरिया इस मामले में सबसे आगे है क्योंकि सहरिया आस पास के इंडस्ट्री एरिया में चले जाते है तथा वो ठेकेदार जो मजदूरी के लिए लेने आते है उनमें सहरिया की डिमांड होती है। मजदूरी में दूर तक जाने में भारिया सहरिया के बाद दूसरे है। भारिया के पास अपने पेड़ है, जो जंगल है, उनसे उनकी आर्थिक आपूर्ति हो जाती है। बैगा बाहर जाने के नाम पर थोड़े शर्मीले है, वहाँ भी ठेकेदार लेने जाते है पर वहाँ केवल युवा चले जाते है। तीनो की तुलना की जाए तो सहरिया प्रथम और बैगा अंतिम होगें।

खेती और फसल

बैगा, भारिया व सहरिया तीनों एक ही फसल बोते है क्योंकि उनके आस–पास पानी के कोई विषिष्ट क्षेत्र नही है और जो है वहाँ से पानी लाने के उनके पास कोई विशेष साधन नहीं है। योजनाओं में मिली मोटर या पाईप फुट जाने, मोटर जल जाने या खराब हो जाने के बाद बैगा भारिया सहरिया इन्हे रिपेयर नहीं करवा पाते जिसका परिणाम ये होता है कि वह एक अच्छी फसल उगाने से चूक जाते है। अगर बरसात के दिनों में बरसात ज्यादा हो जाए तो फसल नष्ट हो जाती है। कोदो–कुटकी फसल मात्र खाने के लिए होती है और इनका आखिरी सहारा बनती है।

बीज संग्रहण

बैगा व भारिया बीजों को संग्रहित करके रखते है ताकि अगले वर्ष की फसल को उगाया जा सके। वे इसमें माहिर भी है, सहरिया संग्रहण के क्षेत्र में बहुत पीछे है भारिया के पास बीजों का संग्रहण बहुत अच्छी मात्रा में देखने को मिल जाएगा इस आदत की वजह से बरसात के समय में भारिया व बैगा को साहूकारों से कम कर्ज लेना पड़ता है।

जंगल के उत्पाद

जिन आदिवासी क्षेत्रो में चारोली, गोंद, तेंदू पत्ता जैसे कई उत्पाद मिलते है वह बहुत रिस्क जोन में होते है या गहरे जंगलो में होते है। चूंकि जनजातियों के लिए वह क्षेत्र जाना पहचाना है इसलिए उसके लिए वह कम दिक्कत का क्षेत्र है। खतरा होने के बावजूद भी उन्हे अपने उत्पादों का उचित दाम नहीं मिलता है जो उन्हे मिलना चाहिए। जबकि बिचौलिए बहुत बड़े हिस्से को रख लेते है। सिर्फ उद्योगो को देने का उनका मार्जिन बहुत बड़े स्तर पर होता है जो कि जनजातीय लोगो के हिस्से में आना था। तीनो जनजातियाँ वनो पर आश्रित है चाहे इंधन के लिए, चाहे घर बनाने के लिए, चाहे वनोपज के लिए। तीनों ही जनजातियों में भारिया वनोपज में सर्वाधिक समृद्ध है। इसी वजह से यहॉ आर्युवेदिक औषधि सर्वाधिक पाई जाती है। भारिया औषधियों के सबसे बड़े जानकार भी है। बैगा ने जैसे–जैसे अपने पेड़ खोए वैसे–वैसे उनके वनों में जड़ी बुटियों की किस्में कम हो गई है। सहरिया जड़ी बूटियों के सबसे कम जानकार है और आर्थिकता में भी सबसे कमजोर। सरकार को ऐसे उद्योगो की स्थापना करनी होगी जहाँ ये तीनों अपनी वन उपज सीधे जाकर बेच सके।

यातायात

पक्के व कच्चे रोड़ो के निर्माण तथा गांव में मोटर साईकल की उपलब्धता ने बैगा, भारिया व सहरिया के कुछ गांवो को जोड़ दिया है और कुछ जुड़ने की तैयारी में है। इन जनजातियों के गांव पहले जितने सुदूर माने जाते थे अब उतने नहीं माने जाते। जनजातीय क्षेत्रो में जहाँ कच्ची सड़के है वहाँ बरसात के दिनों में परेशानियो का सामना करना पड़ता है जैसे बच्चे इसी वजह से स्कूल नहीं जा पाते है, शहरो से दूरी बढ जाती है, आवश्यक चीजो को पहुँचाने में तकलीफ होती है और दूरसंचार सुविधा ठप्प हो जाती है।

मोबाईल

प्रत्येक जनजाती के युवाओं के पास जहाँ भी नेटवर्क है वहाँ मोबाइल जरूर है। वजह है कि वो खुद मजदूरी करते है, और स्वयं इसे खरीद सकते है। अध्ययन के दौरान मोबाईल से गाने सुनते युवा देखे गये है। इस वजह से वो लोग कई अंग्रेजी के शब्दो को समझते है।

राजनैतिक दृष्टिकोण

वोट

राजनीति एक ऐसा विषय है जिस पर इन तीनों जनजातियों को बात करना अच्छा लगता है। चुनाव के समय उन्हे मुफ्त में शराब, खाना व कपड़े मिलते है, नगद में पैसे भी मिलते है। प्रत्येक राजनैतिक पार्टी के लोग उनके संपर्क में रहते है भारिया क्षेत्र में तो गोंडवाना पार्टी भी थी जो की जनजातीय पार्टी के रूप में स्वयं को प्रचारित करती है। यह भी सत्य है कि अन्य समुदायों की तरह एक दिन जनजातियाँ स्वयं की पार्टी बना ही लेगें।

नेता

प्रत्येक जनजाति अपने हिसाब से अपना लीडर चुनती है और उसे पटेल, मुखिया या अन्य नामों से जानती है। इन तीनों में नेता सामाजिक स्वरूप का प्रतिनिधित्व करता है और उसी जनजाति के लोग उसे चुनते है। अगर जनजातियों के लोगों को लगता है कि उनके नेता ठीक नहीं है तो इसके लिए लोकतांत्रिक व्यवस्था होती है अर्थात वे सब मिलकर अपने लीडर को

हटा देते है। किसी सम्मानीय व लोकप्रिय व्यक्ति को ही नेता बनाया जाता है।

विभिन्न मौसमों में जनजातीय जीवन

बरसात के मौसम में जनजातीय क्षेत्र

बरसात के दिनों में सूखी जमीन पर हरियाली छा जाती है, जिसकी उम्मीद जनजातीय किसान भी करते है, क्योंकि ज्यादातर किसान वर्ष में एक ही फसल बोते है। उनका जीवन हमेशा ही पानी की कमी में गुजरता है, चाहे फसलों के लिए, पशुओं के लिए, दैनिक जरूरतो के लिए या पीने के लिए। बरसात में फसल बोने के साथ–साथ बीमारियो का दौर भी आता है खासकर बच्चे उल्टी, दस्त, बुखार जैसी बिमारियों से ग्रसित होते है। गांवो का अन्य क्षेत्रो से संपर्क टूटने की वजह से उनका इलाज भी ठीक तरह से नहीं हो पाता है। जंगल में नए फल–फूल आते है जो जड़ी बूटियों के रूप में उपयोग होते है। इनमें से कुछ आर्थिक रूप से उपयोगी होते है। कुछ जड़ी बुटियां शीतकाल व ग्रीष्मकाल में उगती है पर सर्वाधिक बरसात के दिनों में ही मिलती है। अचानक नदियों में पानी बढ़ जाता है जिससे मछली पकड़ने का काम शुरू हो जाता है यह युवाओं के लिए मनोरंजन भी है।

शीतकाल में जनजातीय क्षेत्र

इस समय में बहुत अधिक ठंड होती है, चूंकि जनजातीय लोगों के पास ज्यादा ऊनी कपड़े नहीं होते तो वे अपने साधारण कपड़ो को डबल करके पहन लेते है। इस समय साफा पहने लोग आसानी से देखे जा सकते है, चूंकि कई जगहों पर कोहरा छाया रहता है। अतः धुंध की वजह से दिखाई देना मुश्किल हो जाता है इसी समय वनों से सर्वाधिक जलाऊ लकड़ी लाई जाती है, और कम पानी की फसल जैसे की चने की खेती की जाती है। कई जनजातीय क्षेत्रों में ये खतरा होता है कि जंगली जानवर उनकी फसलें ना खा जाए। बूढ़े व्यक्तियों के लिए ठंड का मौसम सर्वाधिक कष्टदायक होता है क्योंकि इसी मौसम में उनकी सर्वाधिक मौत होती है। जंगल वाले क्षेत्रों में जाने पर और अधिक ठंड लगती है। सुबह–सुबह कपड़े नम पड़ जाते है, धूप ना निकलने पर इन कपड़ों में बीमारियॉं पनपने लगती है, इस मौसम में सर्दी खॉसी होना आम बात है तथा कई महिलाओं को सांस की बीमारी हो जाती है।

ग्रीष्मकाल में जनजातीय क्षेत्र

ये तीनों ही जनजातियाँ गर्मियों के दिनों में सर्वाधिक आर्थिक दिक्कतों से गुजरते हैं। ये लोग मध्यप्रदेश के अन्य जिलों में या मध्यप्रदेश से बाहर रोजगार की तलाश में निकल जाते है, ये लोग ईट के भट्टों में तथा खेती के काम करते है। बरसात आने के कुछ दिनों पहले भारिया और बैगा लोग अपने घरों की कवेलु वाली छतों को ठीक करते है ताकि बारिश में पानी घर में ना घुस सके। बैगा व भारिया अनाज व बीजों को बड़े बर्तनों में संग्रहण कर लीप देते है ताकि उन्हें सुरक्षित रखा जा सके। इस समय जनजातीय लोग अपने पालतू जानवरों को बेच कर अपनी आजिविका का बड़ा हिस्सा पाते है। साथ ही पानी की कमी होने से महिलाओं का ज्यादातर समय पानी लाने में चला जाता है। इस समय भजनों, गीतो संध्याओं का दौर ज्यादा होता है, इसी समय लोकगीत व संगीत को सर्वाधिक तवज्जों दी जाती है।

सुझाव

ज्यादातर वो दिक्कतें जो गांव के लोगो को परेशान करती है उन्हे उनके शिक्षा पद्धति में डालनी चाहिए जैसे – मोटर जल जाने पर रिपेयरिंग, पंचर बनाना, सरकार को बैंको से कर्ज लेने की जागरूकता को बढ़ावा देना होगा। जनजातीय समुदाय अगर स्वयं की पार्टी हो तो राजनैतिक रूप से वो ज्यादा संरक्षित महसूस करेगें।

निष्कर्ष

योजनाओं के क्रियान्वयन की कमी की वजह से विकास जनजातियों के जीवन में बहुत लंबे समय तक दूर रहा है। जहाँ–जहाँ यातायात की व्यवस्था हुई, वहाँ–वहाँ विकास ने अपनी गति पकड़ी। आजादी के बाद जनजातियों की स्थिति में बहुत बदलाव आया लेकिन जितना आना चाहिए था, वह बदलाव नहीं हो पाया। आज वर्तमान की स्थिति में भी हम जनजातियों की आधारभूत जरूरतों पर केन्द्रित है जैसे कि रोटी, कपड़ा, मकान, बिजली, शिक्षा एवं पानी। जबकि यह कार्य 1970 के दशक के पहले ही खत्म हो जाना चाहिए था और आज उनकी समस्याएं कुछ और होनी चाहिए। भारत का एक बहुत बड़ा हिस्सा प्रतिनिधित्व की दौड़ में खड़ा है और बहुत बड़ा हिस्सा उस दौड़ की लाईन तक जाने के इंतजार में खड़ा है जिसमें जनजातियाँ फिलहाल सबसे पीछे है। संपूर्ण विश्व के द्वारा वो इस स्थिति में मान लिए गए है कि उनकी संस्कृति, मौलिकता और ज्ञान अब अस्वीकार्य कर नकार दिया गया है और यह मान लिया गया है कि इसी वजह से ये पिछड़े है। उनके रीति रिवाजो और परंपराओं को सिरे से खारिज कर दिया गया है। जिसकी वजह से वो और निचली अवस्था में जा चुके है। जिन लोगो ने अल्प मात्रा में भी विकास किया उन्होंने अपने मूल अस्तित्व को खो दिया है। जनजातियों का विकास उनकी संस्कृति, परंपराओं को सहजते हुए किया जाना आवश्यक है। जिससे जनजातियों को मूल रूप में आगे बढ़ाया जा सके।

Reference

सिन्हा, एस. (2014) : सेंसस ऑफ इंडिया 2011, मध्यप्रदेश डिस्ट्रिक्ट सेंसस हेण्डबुक, श्योपुर, सीरीज 24 पार्ट XII ए, डायरेक्टोरेट ऑफ सेंसस आपरेशन्स, मध्यप्रदेश, भोपाल

संदर्भ क्र 6 पृ 30

Annual report 2014-15, tribal welfare & Development, Government of India.

Baviskar Amita. (1995). In the belly of the river, tribal conflict over development in the Narmada valley. New Delhi: Oxford University Press.

Bhowmick, Prabodh kumared,(2008), tribal people of India : Society culture and development (R N, Bhattacharya Kolkata, 2008.

Bhupendra Singh and mahanti, neeti,(1997), tribal policy in India. (inter- India publication, new Delhi, 1997.

Bhupinder Singh,(1995),Democratic decentralization in tribal ares : approach and paradigms in

the context of the constitution seventy-third and seventy- fourth amendments. (Rajiv Gandhi institute for contemporary studies, new Delhi, 1995.

Bose, N.K. (1974), Tribal Life in India: National Book Trust, New Delhi.

Bose, N.K. (1974), Tribal Life in India: National Book Trust, New Delhi.

Burman , B K R,(1995), tribal situation and approach to tribal problems in India. (Rajiv Gandhi institute for contemporary studies, new dehli,1995)

Chaudhuri, A B,(1949),Tribal Heritage : A study of the santals Lutterwoeth Press (1949)

Chaudhuri, A B,(1993),state Formation among tribal: A quest for santal identity. (Gyan Publishing House 1993)

Cova, Bernard, Robert V. Kozinets, and Avi Shankar (2007), "Tribes Inc.: The New World of Tribalism," in Consumer Tribes, Bernard Cova, Robert V. Kozinets, and Avi Shankar (Eds.) Oxford: Elsevier, 3-26.

Das, N.C. (1989), Tribal Development – A Renovative Appraisal in Tribal Development in India: Ashish Publishing House, New Delhi.

Das, N.C. (1989), Tribal Development – A Renovative Appraisal in Tribal Development in India: Ashish Publishing House, New Delhi.

Das, S, (1986), Tribal of North- Eastern India: Habit Economy customs tradition. (Gian Publishing house, New Delhi1986).

Dubey, Sanjay,(2005),Dynamics of the tribal local polity and panchayat raj I Arunachal Pradesh. (Premiere Publishing house, New Delhi 2005)

H. Al Habsi, (2016) University of Leiden, Qualitative research about the influence of kinship and tribal structures in marriage choices of young, urban educated Omanis, in the Sultanate of Oman.

Harry A. Taute, Jeremy J. Sierra, Jeremy J. Sierra, Robert S. Heiser, (2010), Defining Brand Tribalism.

Impact of Bottom up Planning under PRIs and Women participation therein in the States of Madhya Pradesh, Orissa, Chhattisgarh, Gujarat, Jharkhand and Maharashtra (2009) : Society of Tribal Women for Development (STWFD), Planning Commission Government of India, New Delhi.

India, Ministry of Information and Broadcasting,(1973), Tribal people of India (Publication division New delhi 1973) ISSN: 2320–0227, DOI: 10.9734/JSRR/2015/12972.

Jain, Sandhya : Adi deo arya devata,(2004),A Panormic view of tribal Hindu clutural interface. (Rupa and co. New delhi 2004)

Kumar suresh Singh,(1982), Tribal Movements in India, Manohar.

Lala Salam (Maoist) is Baiga. National drama school's quarterly circle. Drama, (April September 2010), Joint edition drama special edition. Publish NDS

Mahapatra, L.K. (1994), Tribal Development in India-myth &Reality :Vikas Publishing House, Pvt. Ltd., New Delhi.

Majumdar, DN, (1944), affairs of a tribe : A study in Tribal dynamics (Publishers Lucknow 1944)

Mander Harsh, (1999), Tribal land alienation in Madhya pradesh : A brief review of the problem and the efficacy of legislative remedies. (National Center for advocacy studies Pune 1999)

Mazumdar, D.N. (1963), Tribal Rehabilitation in India – Social Change and Economic Development, Edited by Jean Maynard : UNESCO, International Social Science Bulletin, Paris.

Mehta Parkash, (1996), Tribal rights (Shiva publishers distributors, Udaipur 1996).

Mohanty, M.K. (1990), Tribal Society Programs, Planning & Economic Change : Chug Publication, Allhabad.

MOTA (2013): Statistical profile of scheduled cast in India, Ministry of Tribal Affairs, statistical division,

Pattnaik .B. K., (2013). Tribal Resistance Movements and the Politics of Development Induced Displacement in Contemporary Orissa, Social Change, Vol. 43(1), pp 53–78

Paul, G. (2014), TRIBALS : January to Compiled By Documentation Centre.

Prasad Narmadeshwar,(1961),Land and people of tribal Bihar. (Bihar tribal research Institute Ranchi, 1961)

Primitive Tribal Groups and their Population in India, as per 2001 Census. Census of India.

Raizada, Ajit,(1984),Tribal development in Madhya pradesh (Interr- India Publication New delhi 1984)

Rath, Govinda chandra, (2006),Tribal development In India : Contemporary Debate (Sage 2006)

Ratnagar, shereen,(2004),the other Indians : Essays on Pastoralists and prehistoric tribal people. (three essays collective gurgaon 2004)

Raza, Moonis and Ahmad aijazuddin,(1990),atlas of tribal India : with computed tables of the district – level data and its geographical interpretation, (Concepts Publishing Company, New Delhi, 1990)

Sarkar Amitabha and dasgupta samira,(1996),Spectrum of tribal Basta (Agam kala prakashan 1996)

Sarkar, R.M. (2008), Primitive Tribal Groups in India (Tradition Development & Transformation) : Serials Publication, New Delhi.

Scheme of Development of Primitive Tribal Groups (PTGs) (With effect from 1st April 2008), Ministry of Tribal Affairs, Government of India.

Sharma Anuradha,(1998),castes and tribes in India. (Commonwealth publishers New delhi 199

Sharma B D,(1992), tribal affairs in India : the crucial transition. (Sahayog Pustak kuteer trust New Delhi 1992)

Shukla HL,(1990),History of the peopl of Bastar : a study in tribal insurgency(Sharda Publishing house 1990)

Shukla HL,(1986),Tribal heritage of Madhya pradesh (B R Publishing coorporation Delhi 1986)

Singh K S,(1989),Jawahar lal Nehru: Tribes and tribes and tribal policy.(Anthropological survey of India Calcutta1989)

Singh, A.K. (1984), Tribal Development in India : Amar Prakasn , New Delhi.

Srivastava, LRN : Development needs of the tribal people (National council Educational research and train, New delhi)

Tiwari shiv kumar,(2002), Tribal roots of Hinduism(Sarup and sons ISBN 2002)

Varries, Elwin (1963), A New Deal for Tribal India : Ministry of Home Affairs, New Delhi.

Verma, D.K. &Choudhary, S.N. (2010), Empowerment of Tribal Women - A Sociological Analysis of Sahariya in Madhya Pradesh and Khasi in Meghalaya, Tribal Women yesterday, Today and Tomorrow, Rawat Publication, Jaipur.

Xaxa, Virginius (May, 2014), Report of the High Level Committee on Socio-Economic, Health and Educational Status of Tribal Communities of India, Ministry of Tribal Affairs Government of India.

Priya Arya and Ors,(2010),Tribal and human rights : Interns report (Interns – national human rights commission new delhi 2010)

http://117.239.40.246/kbs/administrative/rdc_reports/functional_review_of_departments_of_gom/tribal_development_department.pdf

http://tribal.nic.in/Content/DefinitionATDevelopment.aspx

http://tribal.nic.in/Content/IntegratedTribalDevelopmentITDPsITDA.aspx

http://tribal.nic.in/Content/IntegratedTribalDevelopmentITDPsITDA.aspx

http://tribal.nic.in/Content/List%20of%20ITDA%20MADA%20Pockets%20Clusters%20PTGs.aspx

http://tribal.nic.in/content/list%20of%20scheduled%20tribes%20in%20India.aspx

http://tribal.nic.in/content/list%20of%20scheduled%20tribes%20in%20India.aspx

http://tribal.nic.in/WriteReadData/CMS/Documents/201306030204039113751StatewisePTGsList.pdf

http://tribal.nic.in/WriteReadData/CMS/Documents/201306030204039113751StatewisePTGsList.pdf

http://tribal.nic.in/WriteReadData/userfiles/file/Statistics/StatisticalProfileofSTs2013.pdf

http://unicef.in/Uploads/Resources/Tribal-low-res-for-view.pdf

http://www.historydiscussion.net/essay/tribal-movements-in-india/1797

http://www.indiaenvironmentportal.org.in/files/file/Tribal%20Committee%20Report,%20May-June%202014.pdf

http://www.kcgjournal.org/humanity/issue21/jitendra.php

http://www.kractivist.org/wp-content/uploads/2014/12/Tribal-Committee-Report-May-June-2014.pdf

http://www.tribal.gov.in/DivisionsFiles/NCST-RM/9NationalTrAwGuidlns.pdf

http://www.tribal.gov.in/DivisionsFiles/NCST-RM/NCST/16firstNCSTReport.pdf

http://www.tribal.gov.in/DivisionsFiles/NCST-RM/NCST/17SecondNCSTReport.pdf

http://www.tribal.gov.in/DivisionsFiles/NCST-RM/NCST/18SplNCSTReport(mainReport).pdf

http://www.historydiscussion.net/essay/tribal-movements-in-india/1797

http://www.indiaenvironmentportal.org.in/files/file/Tribal%20Committee%20Report,%20May-June%202014.pdf

http://www.kcgjournal.org/humanity/issue21/jitendra.php

http://www.kractivist.org/wp-content/uploads/2014/12/Tribal-Committee-Report-May-June-2014.pdf

http://www.tribal.gov.in/DivisionsFiles/NCST-RM/9NationalTrAwGuidlns.pdf

http://www.tribal.gov.in/DivisionsFiles/NCST-RM/NCST/16firstNCSTReport.pdf

http://www.tribal.gov.in/DivisionsFiles/NCST-RM/NCST/17SecondNCSTReport.pdf

http://www.tribal.gov.in/DivisionsFiles/NCST-RM/NCST/18SplNCSTReport(mainReport).pdf

http://www.tribal.gov.in/DivisionsFiles/NCST-RM/NCST/19SpecialNCSTReport.pdf

http://www.tribal.gov.in/DivisionsFiles/NCST-RM/NCST/4thNCSTReport.pdf

http://www.tribal.gov.in/DivisionsFiles/NCST-RM/NCST/5thNCSTReport.pdf

http://www.tribal.gov.in/DivisionsFiles/NCST-RM/NCST/5thNCSTReport.pdf

http://www.tribal.gov.in/writereaddata/AnnualReport/AnnualReport2016-17.pdf

http://www.tribal.gov.in/writereaddata/AnnualReport/AnnualReport2015-16.pdf

http://www.tribal.gov.in/writereaddata/AnnualReport/AnnualReport2014-15.pdf

http://www.tribal.gov.in/writereaddata/AnnualReport/AR2004-05.pdf

http://www.tribal.gov.in/writereaddata/AnnualReport/AR2005-06.pdf

http://www.tribal.gov.in/writereaddata/AnnualReport/AR2006-07.pdf

http://www.tribal.gov.in/writereaddata/AnnualReport/AR2008-09.pdf

http://www.tribal.gov.in/writereaddata/AnnualReport/AR2009-10.pdf

http://www.tribal.gov.in/writereaddata/AnnualReport/AR2010-11.pdf

http://www.tribal.gov.in/writereaddata/AnnualReport/AR2011-12.pdf

http://www.tribal.gov.in/writereaddata/AnnualReport/AR2012-13.pdf

http://www.tribal.gov.in/writereaddata/AnnualReport/AR2013-14.pdf

http://www.tribal.gov.in/writereaddata/AnnualReport/BhuriaReportFinal.pdf
http://www.tribal.gov.in/writereaddata/AnnualReport/DevelopmentChallengesinExtremistAffectedAreas.pdf
http://www.tribal.gov.in/writereaddata/AnnualReport/LokurCommitteeReport.pdf
http://www.tribal.gov.in/writereaddata/AnnualReport/Mungekar3rdreport2.pdf
http://www.tribal.gov.in/writereaddata/AnnualReport/NACRecommendationsforPVTGs.pdf
http://www.tribal.gov.in/writereaddata/AnnualReport/ScheduledTribesinIndiaasRevealedinCensus2011.pdf
http://www.tribal.gov.in/writereaddata/AnnualReport/TwelfthFiveYearPlan2012-17.pdf
http://www.tribal.nic.in/WriteReadData/CMS/Documents/201409181141029304179SplReportInnerCoverPage.pdf
http://www.tribal.nic.in/WriteReadData/CMS/Documents/201504291141421695180AnnualReport2014-15.pdf
http://www.mdws.gov.in/sites/default/files/Tribal_Development_Plan.pdf
http://www.tribal.gov.in/DivisionsFiles/andaman.pdf
http://www.tribal.gov.in/DivisionsFiles/mj/13-detailofFundReleased.pdf
http://www.tribal.gov.in/DivisionsFiles/mj/1-revisedScheme.pdf
http://www.tribal.gov.in/DivisionsFiles/mj/3-invitationofApplication.pdf
http://www.tribal.gov.in/DivisionsFiles/mj/4-preventionofAtrocities.pdf
http://www.tribal.gov.in/DivisionsFiles/mj/5-minutesofMeeting.pdf
http://www.tribal.gov.in/DivisionsFiles/mj/6-invitationofProposal.pdf
http://www.tribal.gov.in/DivisionsFiles/NCST-RM/10TribalFestiGuidlns.pdf
http://www.tribal.gov.in/DivisionsFiles/NCST-RM/13GuidelinesandRulesofPhotoCotest.pdf
http://www.tribal.gov.in/DivisionsFiles/NCST-RM/8exchangeofVisits.pdf
http://www.tribal.gov.in/DivisionsFiles/NCST-RM/Revisedguidelines.pdf
http://www.tribal.gov.in/DivisionsFiles/reserveNoti.pdf
http://www.tribal.gov.in/DivisionsFiles/RM/MinutesApex2June2017.pdf
http://www.tribal.gov.in/DivisionsFiles/SwLPVTGs.pdf
http://www.tribal.gov.in/livelihoodSupport.aspx
http://www.tribal.gov.in/pvtg.aspx
http://www.tribal.gov.in/researchandMedia.aspx
http://www.tribal.gov.in/ST/3-STinindiaascensus2011_compressed.pdf
http://www.tribal.gov.in/ST/LatestListofScheduledtribes.pdf
http://www.tribal.gov.in/ST/ListofScheduledTribes(STs)withVerylowliteracyrate.pdf
http://www.tribal.gov.in/ST/Statement-State-DistrictwiseSTLiteracyRate-edited.pdf
http://www.tribal.gov.in/ST/StatewisePvTGsList.pdf
http://www.tribal.gov.in/ST/StatisticalProfileofSTs2013.pdf
https://www.hindiaudionotes.in/2016/06/tribal-revolts-before-indian independence.html
https://www.jagranjosh.com/general-knowledge/summary-of-the-tribal-rebellions-during-british-rule-in-india-1521541943-1
https://www.mpinfo.org/MPinfoStatic/hindi/factfile/janbaiga.asp
https://www.rasjunction.com/2018/03/tribal-movements-of-india-ras-mains.html